नोबल पुरुस्कार विजेता महिला

ओंग सान सू ची

बर्मीज़ राजनीतिज्ञ

मुख्य घटनाएं

1967 ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी से स्नातक

1969 न्यू-यॉर्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ काम

1972 माइकल अरिस के साथ विवाह

1985 क्योटो यूनिवर्सिटी, जापान में विज़िटिंग फैकल्टी

1988 बर्मा वापसी और नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी की स्थापना

1990 पहली पुस्तक *बर्मा एंड इंडिया* का प्रकाशन

1991 नोबल शांति पुरुस्कार से सम्मानित

1995 घर में नज़रबंदी से रिहा

"प्रजातंत्र के लिए हमारा संघर्ष रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के सन्दर्भ में है. आप रोज़मर्रा के जीवन से देश की राजनैतिक व्यवस्था को अलग करके नहीं देख सकते हैं."

1945-

ऑंग सान सू ची

बर्मीज़ राजनीतिज्ञ

शुरू के साल

सू ची का जन्म बर्मा की राजधानी रंगून में हुआ. जब वो सिर्फ दो साल की थीं तब उनके पिता का देहांत हो गया. उनकी परवरिश अपने पिता के साए में ही हुई. बर्मा की राजनीती में उनके परिवार का एक अहम रोल था. उनके पिता एक राष्ट्रीय हीरो थे.

जब सू ची पंद्रह साल की थीं तब उनकी माँ भारत की राजदूत बनीं. सू ची भी अपनी माँ के साथ भारत गईं. वहां उन्होंने भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास गाँधी के बारे में पढ़ा. सू ची के पिता की तरह ही गाँधी ने भी अपने लोगों की आज़ादी और उनके न्याय के लिए संघर्ष किया था.

गाँधी के अनुयायी शांतिपूर्ण आंदोलनों में विश्वास रखते थे. जब उनपर कोई आक्रमण करता था तब भी वे हिंसा का उपयोग नहीं करते थे. गाँधी के विचारों का सू ची पर गहरा असर पड़ा.

मोहनदास करमचंद गाँधी जैसे ही सू ची भी हिंसा के खिलाफ हैं.

पृष्ठभूमि

सू ची के पिता जनरल औंग सन, बर्मा के राष्ट्रीय हीरो थे. लोग प्यार से उन्हें "ग्रेट जनरल" के नाम से बुलाते थे. 1930 में उन्होंने उस आन्दोलन का नेतृत्व किया था जो बर्मा को ब्रिटेन से मुक्त कराने की लड़ाई लड़ रहा था. दूसरे महायुद्ध के बाद जनरल औंग सन ने बर्मा की आज़ादी के लिए एक राजनैतिक पार्टी का गठन किया. उसके बाद ब्रिटिश हुकूमत बर्मा से गई और उन्होंने बर्मा में मुक्त चुनाव करवाने का इंतजाम किया. इलेक्शन में जनरल औंग सन की पार्टी की भारी विजय हुई. पर प्रधानमंत्री बनने से पहले ही उनके दुश्मनों ने उनका क़त्ल करवा दिया. उस समय वो सिर्फ 32 साल के थे.

पृष्ठभूमि
बर्मा (म्यांमार)

आज से एक हज़ार साल पहले बर्मा एक स्वाधीन देश था. बाद में अन्य देशों ने उसपर कब्ज़ा किया. फिर उन्नीसवीं शताब्दी में वो ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बना और उसपर ब्रिटेन ने राज किया. दूसरे महायुद्ध में जापान ने बर्मा पर कब्ज़ा किया. बर्मा के लोग इंग्लैंड की अपेक्षा जापानी शासन से ज्यादा नफरत करते थे. जापान की हार के बाद ब्रिटेन ने कुछ और साल बर्मा पर राज्य किया. फिर 1948 में बर्मा एक स्वतंत्र देश बना. 1962 तक वहां पर प्रजातंत्र था. फिर कुछ फौजी अफसरों ने सत्ता झपट ली. तबसे बर्मा का शासन एक मिलिट्री कौंसिल के हाथ में है.

वहां कोई विरोधी पक्ष नहीं है. 1980 में देश का नाम बर्मा से बदलकर म्यांमार किया गया.

चीन
बर्मा (म्यांमार)
वियतनाम
लाओस
रंगून
थाईलैंड
अंडमान समुद्र

कुशलताओं का विकास

जब 1962 में मिलिट्री ने बर्मा में सत्ता हथियाई उस समय सू ची भारत में थीं. भारत से वो बर्मा वापिस नहीं गईं. वो भारत से इंग्लैंड गईं और वहां पर उन्होंने ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में राजनीति, दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया. उनका अंग्रेजी साहित्य पढ़ने का बहुत मन था परन्तु उन्होंने वे विषय चुने जिन्हें बाद में वो देश के विकास के लिए उपयोग कर सकती थीं. सू ची का एक दिन अपने वतन वापिस लौटने का सपना था.

स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद सू ची ने कुछ समय इंग्लैंड में पढ़ाया. वहां से वो न्यू-यॉर्क गईं जहाँ उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ काम किया. 1972 में सू ची ने माइकल अरिस से शादी की. वो उनसे ऑक्सफ़ोर्ड में मिलीं थीं. शादी से पहले सू ची ने माइकल को कसम दिलवाई कि अगर कभी ज़रुरत पड़ी तो वो उन्हें बर्मा लौटने से नहीं रोकेंगे. माइकल ने यह बात स्वीकार की.

अगले कुछ साल वे दोनों ऑक्सफ़ोर्ड में रहे जहाँ पर माइकल तिबत्ती साहित्य के विशेषज्ञ थे.

1980 के मध्य में जब माइकल भारत में काम कर रहे थे तब सू ची अपने पिता के जीवन पर शोध करने के लिए जापान गईं. सू ची ने अपने पिता के बारे में जितना पढ़ा उन्हें उतना ही लगा कि उन्हें अपने देश बर्मा वापिस लौटना चाहिए.

"बड़े होकर जब मैंने अपने पिताजी की ज़िन्दगी पर सामग्री इकट्ठी करना शुरू की तब मेरी सच्ची सीख शुरू हुई. तब मुझे पता चला कि उन्होंने 32 वर्षों में कितना कुछ हासिल किया था."

1988 में सू ची बर्मा वापिस गईं. उनकी माँ मृत्यु के करीब थीं और सू ची ने माँ की देखभाल की. देश में बहुत उथल-पुथल थी. 26 साल के मिलिट्री शासन के बाद बर्मा पूरी एशिया का सबसे गरीब देश बन गया था. लोग हताश हो गए थे और अब निराशा में वे अपनी ज़िन्दगी को दांव पर लगाकर सरकार को चुनौती दे रहे थे.

उस साल लोगों के आन्दोलन शिखर पर पहुंचे. तब हजारों छात्रों ने सड़कों पर जलूस निकाला. उन्होंने मुक्त चुनाव और खुद अपना नेता चुनने की मांग की. छात्रों के जुलूस को पुलिस और फौज की गोलियां खानी पड़ीं. इससे लोगों का जनांदोलन और तेज़ हुआ. उससे और लोग गोलियों के शिकार हुए. 1988 में एक हफ्ते में 3000 लोगों को पुलिस ने मार डाला था.

सू ची बर्मा की इस हालात को और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी. "अपने पिता की बेटी होने के नाते, मेरा यह फ़र्ज़ बनता है कि मैं इस आन्दोलन में शामिल हूँ," सू ची ने कहा.

परंपरागत नए साल के उत्सव पर सू ची अपने समर्थकों के सिरों पर पानी छिड़क रही हैं.

बहुत हिम्मत वाली इंसान

1989 में जब सू ची ने मिलिट्री सत्ता के खिलाफ अपना रुख सख्त किया तब उन्हें पता था कि उनकी ज़िन्दगी खतरे में हो सकती है. मिलिट्री सत्ता ने फौजियों को सू ची को मार डालने के आदेश दिए थे. जब सू ची ने फौजियों को अपनी ओर निशाना ताकते हुए देखा तो वो चुपचाप खुद उनके पास चलते हुए गई और उन्होंने भीड़ को वहां से तितर-बितर होने को कहा. फौजियों का अफसर सू ची के इस कृत्य से इतना प्रभावित हुआ कि उसने सैनिकों से गोली नहीं चलाने को कहा. सू ची ने बाद में बताया कि वो चाहतीं थीं कि उनके अलावा उस हादसे में और कोई न मरे.

उपलब्धियां

1988 में सू ची ने एक बहुत महत्वपूर्ण भाषण दिया. बर्मा के सबसे पवित्र पगोडा में उन्होंने देश में मानवीय अधिकारों की बात की – विशेषकर लोगों को मत द्वारा खुदकी सरकार चुनने का अधिकार. उसके अगले महीने उन्होंने नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (NLD) की स्थापना की. तब सू ची ने पूरे देश का दौरा किया और सभी शहरों और छोटे-छोटे गाँव में भी भाषण दिए.

जहाँ कहीं भी सू ची गईं वहां पर उन्हें सुनने के लिए लोगों की अथाह भीड़ जमा हुई. फौज की इतनी बड़ी भीड़ पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हुई. पर उन्होंने सू ची के समर्थकों को डराने-धमकाने की बहुत कोशिश की. जब सरकार की यह चाल विफल हुई तब उन्होंने 1990 में चुनाव कराने का वादा किया.

ऐसा लगता था जैसे सू ची ने प्रजातंत्र की लड़ाई जीत ली हो. पर 1989 से सरकार ने सू ची को घर पर नज़रबंद कैद किया. अब वो चुनाव के प्रचार-प्रसार के लिए कहीं नहीं जा सकती थीं. उसके बावजूद सू ची की पार्टी को चुनाव में 80 प्रतिशत वोट मिले. तब सू ची अपने देश की नेता बन सकती थीं पर मिलिट्री शासक सत्ता छोड़ने को तैयार नहीं थे. उन्होंने सू ची को घर पर ही नज़रबंद रखा और उनके सबसे करीबी समर्थकों को जेल में डाल दिया.

"बर्मा के लोग अपने ही देश में ही कैदियों जैसे रह रहे हैं. मिलिटरी सत्ता ने लोगों के सभी अधिकारों का हनन किया है."

1991 में सू ची को "अहिंसक संघर्ष और प्रजातंत्र और नागरिक अधिकारों की लड़ाई के लिए" शांति के लिए नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया. शुरू से ही सू ची, महात्मा गाँधी के पदचिन्हों पर चली थीं. उन्होंने अपने समर्थकों से पुलिस और फौज के आक्रमण के बाद भी शांति बनाए रखने को कहा. नोबल पुरुस्कार कमेटी ने सू ची द्वारा प्रजातंत्र के संघर्ष को "हाल के दशकों में एशिया में शांतिपूर्ण संघर्ष और नागरिक साहस का एक अदभुत उदाहरण बताया."

सू ची की नज़रबंदी 1995 में ख़त्म हुई, पर उसके बाद भी उन्हें बहुत कम आज़ादी ही थी. सू ची की रिहाई के बाद जब उनकी NLD पार्टी ने एक सभा आयोजित की तो सरकार ने NLD के सैकड़ों समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया.

1997 में सू ची ने, गुप्त रूप से एक विडियो देश के बाहर भेजा. इसमें उन्होंने पूरी दुनिया के लोगों की बर्मा में प्रजातंत्र की बहाली के लिए मदद मांगी. उन्होंने कहा कि वो अपने देश की "दूसरी आज़ादी की लड़ाई" को तब तक लड़ेंगी जब तक वो उसे जीत नहीं जाती हैं.

कुछ नोट्स:

Suu Kyi का उच्चारण है सू ची.

अधिकांश बर्मीज़ लोगों की तरह सू ची भी बौध धर्म को मानती हैं.

सू ची के दो बेटे हैं. पर उनकी नज़रबंदी के काल में वो अपने दोनों बेटों और पति से एक बार भी नहीं मिल पाईं.

सू ची के लेख, इंटरव्यू और भाषणों पर कई किताबें छपी हैं जिसमें *फ्रीडम फ्रॉम फियर एंड अदर रायटिंग्स (1991)* और *द वौइस् ऑफ़ होप (1997)* शामिल हैं.

राजनैतिक बंदी (प्रिजनर ऑफ़ कॉनशिएंस) उन कैदियों को कहते हैं जिन्हें उनकी राजनैतिक आस्थाओं के लिए जेल में डाला जाता है.